بسم اللہ الرحمٰن الرحیم

फ़हम क़ुरआन में मददगार दुआऐं

1.اَللّٰھُمَّ ارْزُقْنِیَ التَّفَکُّرَ وَالتَّدَبُّرَ لِمَا یَتْلُوْہُ لِسَانِیْ مِنْ کِتَابِکَ،وَالْفَھْمَ لَہُ وَالْمَعْرِفَۃَ بِمَعَانِیْہِ،وَالنَّظَرَ فِیْ عَجَآئِبِہِ،وَالْعَمَلَ بِذٰلِکَ مَا بَقِیْتُ اِنَّکَ عَلٰی کُلِّ شَیْءٍ قَدِیْرٌ. [سیدنا عمر کی دعا،البلاغۃ العمریّۃ،ج:1،ص:209]

ऐ अल्लाह! तेरी किताब(क़ुरआन)में मेरी ज़बान जो पढ़ती है उसमें मुझे तफ़क्कुर,तदब्बुर और उसकी समझ अता फ़रमा और इसके मानों और अजायबात की पहचान करवा और जब तक मैं ज़िन्दा हूं इसके मुताबिक़ अमल करूँ,बेशक तू हर चीज़ पर क़ुदरत रखने वाला है.

2.اَللّٰھُمَّ اٰنِسْ وَحْشَتِیْ فِیْ قَبْرِیْ،اَللّٰھُمَّ ارْحَمْنِیْ بِالْقُرْاٰنِ الْعَظِیْمِ وَاجْعَلْہُ لِیْ اِمَامًا وَّنُوْرًا وَّھُدًی وَّرَحْمَۃً،اَللّٰھُمَّ ذَکِّرْنِیْ مِنْہُ مَا نَسِیْتُ،وَعَلِّمْنِیْ مِنْہُ مَا جَھِلْتُ،وَارْزُقْنِیْ تِلَاوَتَہُ اٰنَآءَ اللَّیْلِ وَاٰنَآءَ النَّھَارِ،وَاجْعَلْہُ لِیْ حُجَّۃً یَّارَبَّ الْعَالَمِیْنَ.

ऐ अल्लाह! मेरी क़ब्र में मेरी वहशत को मानूस करदे-ऐ अल्लाह! क़ुरआने अज़ीम की वजह से मुझपर रहम फ़रमा और इसको मेरे लिए इमाम,नूर, हिदायत और रहमत बनादे-ऐ अल्लाह! इसमें जो मैं भूल गया वो मुझे याद करवादे और इसमें से जो मैं नहीं जानता वो मुझे सिखादे-रात की घड़ियों में और दिन की घड़ियों में मुझको इसकी तिलावत अता फ़रमा और इसको मेरे हक़ में हुज्जत बनादे ऐ रब्बल आलमीन!

3.اَللّٰھُمَّ اِنِّیْ عَبْدُکَ وَابْنُ عَبْدِکَ وَابْنُ اَمَتِکَ نَاصِیَتِیْ بِیَدِکَ مَاضٍ فِیَّ حُکْمُکَ عَدْلٌ فِیَّ قَضَاؤُکَ اَسْاَلُکَ بِکُلِّ اسْمٍ ھُوَ لَکَ سَمَّیْتَ بِہِ نَفْسَکَ اَوْ عَلَّمْتَہُ اَحَدًا مِنْ خَلْقِکَ اَوْ اَنْزَلْتَہُ فِیْ کِتَابِکَ اَوِ اسْتَاْثَرْتَ بِہِ فِیْ عِلْمِ الْغَیْبِ عِنْدَکَ اَنْ تَجْعَلَ الْقُرْاٰنَ رَبِیْعَ قَلْبِیْ وَنُوْرَصَدْرِیْ وَجِلَاءَ حُزْنِیْ وَذَھَابَ ھَمِّیْ. [مسند احمد:3712]

ऐ अल्ला! बेशक मैं तेरा बन्दा हूं,तेरे बन्दे का बेटा और तेरी बन्दी का बेटा, मेरी पेशानी तेरे हाथ में है,मेरी ज़ात पर तेरा ही हुक्म चलता है, मेरी ज़ात के बारे में तेरा फ़ैसला अदलो इन्साफ़ वाला है,मैं तुझसे तेरे हर उस नाम का वास्ता देकर सवाल करता हूं जिसको तूने अपने लिए ख़ुद तज्वीज़ किया या अपनी मख़्लूक़ में से किसी को वो सिखाया या इसे अपनी किताब में नाज़िल फ़रमाया या इसे अपने पास इल्म ग़ैब में ही महफ़ूज़ रखा कि तू क़ुरआन को मेरे दिल की बहार,मेरे सीने का नूर,मेरे ग़म में रोशनी और मेरी परेशानी की दूरी का ज़रिया बनादे

4. اَللّٰھُمَّ اقْسِمْ لَنَا مِنْ خَشْیَتِکَ مَا یَحُوْلُ بَیْنَنَا وَبَیْنَ مَعَاصِیْکَ وَمِنْ طَاعَتِکَ مَا تُبَلِّغُنَا بِهٖ جَنَّتَکَ وَمِنَ الْیَقِیْنِ مَا تُهَوِّنُ بِهٖ عَلَیْنَا مُصِیْبَاتِ الدُّنْیَا وَمَتِّعْنَا بِاَسْمَاعِنَا وَاَبْصَارِنَا وَقُوَّتِنَا مَا اَحْیَیْتَنَا وَاجْعَلْهُ الْوَارِثَ مِنَّا وَاجْعَلْ ثَاْرَنَا عَلٰی مَنْ ظَلَمَنَا وَانْصُرْنَا عَلٰی مَنْ عَادَانَا وَلَا تَجْعَلْ مُصِیْبَتَنَا فِیْ دِیْنِنَا وَلَا تَجْعَلِ الدُّنْیَا اَکْبَرَ هَمِّنَا وَلَا مَبْلَغَ عِلْمِنَا وَلَا تُسَلِّطْ عَلَیْنَا مَنْ لَا یَرْحَمُنَا. [سنن الترمذی:3502]

ऐ अल्लाह! हम में अपने ख़ौफ़ को इतना तक़्सीम करदे कि वो हमारे और तेरी नाफ़रमानी के दर्मियान हाइल हो जाए और अपनी फ़रमा. बरदारी (हम में तक़्सीम करदे कि) वो हमें तेरी जन्नत तक पहुंचादे और इतना यक़ीन दे कि हम पर दुनिया की मुसीबतें आसान हो जाऐं और जबतक तू हमें ज़िन्दा रखे हमें हमारी समाअत,बसारत,और क़ुव्वत से फ़ायदा दे और इसे हमारा वारिस बनादे और हमारा इन्तिक़ाम इसी तक महदूद करदे जो हम पर ज़ुल्म करे-जो हमसे दुश्मनी करे उसके मुक़ाबले में हमारी मदद फ़रमा और हमारे दीन में मुसीबत नाज़िल ना फ़रमा,दुनिया को हमारा सबसे बड़ा ग़म ना बना और ना (दुनिया) को हमारे इल्म की इन्तिहा बना और हम पर ऐसे(शख़्स)को मुसल्लत ना कर जो हम पर रहम ना कर.

5. سُبْحَانَکَ اللّٰھُمَّ وَبِحَمْدِکَ اَشْهَدُ اَنْ لَا اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ اَسْتَغْفِرُکَ وَاَتُوْبُ اِلَیْکَ. [سنن الترمذی:3433]

ऐ अल्लाह! तू पाक है और तेरी ही तारीफ़ है,मैं गवाही देता हूं कि तेरे सिवा कोई माअबूद नहीं,मैं तुझसे बख़्शिश मांगता हूं और तेरी तरफ़ तौबा करता हूं-

April 2017 | Edition: 1

AL-HUDA Publications (Pvt.) Ltd.
7 A.K. Brohi Road H-11/4 Islamabad.
+92-51-4866130-1 | www.alhudapk.com